गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/ICD/1252/2012-2014

श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास
इन्दौर

golalariya_darshan@yahoo.co.in

गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com

मासिक
गोलालारीय दर्शन
अपनों के साथ अपनी बातें

जो भरा नहीं हैं भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं। हृदय नहीं पत्थर हैं वो, जिसे समाज से प्यार नहीं।

वर्ष : 4 अंक : 1 पृष्ठ संख्या : 10 माह – जून 2012 सहयोग राशि : 100 रु.

अतिथि सम्पादक की कलम से...

बेटियों के बिना भारत माँ

कल्पना कीजिए उस आंचल की जिसमें ईश्वर का सबसे खूबसूरत उपहार बेटियां ना हो? एक तरफ हम नई नई ऊंचाईयों को छू रहे है हमें अपने भारतीय होने पर गर्व होता है, वहीं दूसरी ओर समाज के कुछ कड़वे सच है जिसे देखकर भी हम अनदेखा कर रहे है। सोचते है इससे हमारे जीवन व परिवार पर कोई फर्क नहीं पड़ रहा है ऐसा कर हम कुछ गलत भी तो नहीं कर रहे है। लेकिन हर चीज, हर घटना का असर होता है हमें भी कभी ना कभी इन चीजों से गुजरना ही पड़ेगा है। 'भ्रूण हत्या' जैसे पाप से उठने वाली आग की लपटे हमें भी कभी ना कभी झुलसा ही देगी । बहू बेटियों को मारने जैसे जघन्य अपराध हो तो उसे ईश्वर भी कैसे माफ करेगा ?

हम सभी की जिंदगी में सबसे खास यदि कोई है तो वह है – माँ। औरत, महिलाओं या बच्चियों के बगैर हम दुनिया या यूं कहे इंसानियत को आगे नहीं बढ़ा सकते हैं।

कन्या भ्रूण जिसका अभी कोई अस्तित्व नहीं है लेकिन जो प्राकृतिक रुप से सृष्टि को आगे बढ़ाने का दायित्व लेकर अपनी मां की कोख में आई है उसे इस दुनिया में लाने का दायित्व मां–बाप के साथ डाक्टरों का भी है । लेकिन डाक्टर ही यदि कन्याभ्रूण की हत्या कर सबूत मिटाने के लिए भ्रूण कुत्तों को खिला देता है तो फिर समाज और हम क्या कर रहे हैं ? यह दिल दहलाने वाली बर्बर घटना महाराष्ट्र के बीड इलाके की है जहां लिंग अनुपात सबसे कम है 1000 लड़को पर केवल 801 लड़कियां। जबकि राष्ट्रीय जनगणना 2011 में प्रति हजार लड़कों पर 914 लड़कियां है। जब हम इस अनुपात को राष्ट्रीय जनसंख्या से मेल करेंगे तो आप और हम दहल जावेंगे क्योंकि यह अंतर करोड़ों का हो जायेगा।

केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन की रिपोर्ट अनुसार भारत में 682000 कन्या भ्रूण हत्याएं हुई है। यूनिसेफ के अनुसार 10% महिलाएं विश्व की जनसंख्या से लुप्त हो चुकी है यानि की 40 सालों में 3 करोड़ लड़कियों की हत्या हुई है। अल्ट्रा साउंड मशीन आने के बाद हालात बहुत बदतर हुए हैं।

विश्व में केवल कोरिया ही ऐसा देश है जिसने कन्या भ्रूण हत्या पूर्ण प्रतिबंध लगाया है । भारत के पंजाब राज्य के नंवा शहर में लड़के लड़कियों का अनुपात बराबर है जो शुभ संकेत है। ऐसा ही शुभ संकेत म.प्र. के **मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंहजी चौहान** ने अपने अथक प्रयासों से लाड़ली लक्ष्मी योजना, कन्यादान योजना और बेटी बचाओं अभियान चलाकर दिया है। जिससे प्रदेश की समस्त बेटियां अपने मामा श्री शिवराजसिंहजी की सदैव ऋणी रहेगी। यदि यह जघन्य अपराध रोका ना गया तो इसके अनेक दुष्परिणाम हमारे सामने आयेगे जैसे सामाजिक अपराध, महिलाओं पर अत्याचार, शादी के लिए क्रय विक्रय, अपहरण व बलात्कार जैसी घटनाएं होगी। बहुपति प्रथा व स्वयंवर जैसी कुरीति को बढ़ावा मिलेगा। एक समय ऐसा आयेगा कि चारों तरफ सिर्फ लड़के ही लड़के दिखाई देंगे। जिन लड़को को हमने बड़ी चाहत से पाला पोसा है उनको कोई जीवन साथी नहीं मिल पायेगा, वे कुंवारे ही रह जायेगे बिल्कुल अकेले। आने वाले 10 सालों में दो करोड़ लड़कों को लड़कियां नहीं मिल पायेगी। कल्पना कीजिए उस वीराने की उस दुखदाई स्थिति की जिसमें सुकुमारी नाजुक और रिश्तों को सहेजकर रखने वाली लड़कियां नहीं होगी। भारत मां केवल लड़कों की ही मां बनकर रह जायेगी । अत: बेटियों को अपने अपने स्तर पर सहेज कर रखे। इसी कामना के साथ...

साधना जैन
आकाशवाणी उद्घोषिका, भोपाल

भ्रूण हत्या – एक माँ ही रोक सकती है इस पाप को ।

देश भर में बेटियों की लगातार और तेजी से घटती संख्या न केवल आंकड़ों वरन् बिगड़ते सामाजिक संतुलन की दृष्टि से भी चिंता का विषय है। लिंगानुपात में क्रमश: आ रही गिरावट हमें सोचने को विवश करती है कि आखिर क्यों हम स्वयं ही अपने सामाजिक विनाश की ओर अग्रसर हो रहे हैं? भौतिकवादी विकास की ओर तेजी से बढ़ते मानव ने एक और पर्यावरण और प्रकृति का विनाश किया है, वहीं दूसरी और उसके स्वार्थ और अहंवादी सोच ने मानव समाज की संरचना और संगठन को भी बुरी तरह प्रभावित किया है। आज देश के लगभग हर प्रान्त और हर समाज में बालिकाओं की संख्या लगातार घट रही है। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि क्या हम भविष्य के भयावह परिणामों के प्रति सजग है।

प्रकृति ने हर क्षेत्र में अपना संतुलन स्थापित रखा है इसलिये नर और नारी का अनुपात लगभग बराबर रखा है। एक आदर्श परिवार में पति पत्नी और पुत्र पुत्री के रुप में भी यह संतुलन कायम रहता है। यदि हम प्रकृति के इस नियम की अवहेलना करते हुए परिवार में केवल पुत्रों को ही जन्म देना चाहें और पुत्रियों को पैदा ही न होने दें तो पारिवारिक असंतुलन पैदा होगा जिसके परिणाम पारिवारिक, सामाजिक और नैतिक स्तर पर कदापि अच्छे नहीं होगे। हम भली भांति जानते है कि प्रकृति ने जन्म देने का अधिकार केवल स्त्री को ही दिया है। यदि कन्या भ्रूण हत्या जैसी दुष्प्रक्रिया इसी तरह जारी रही तो एक समय स्त्री जाति का नितांत अभाव हो जायेगा। क्या तब 'जननी बिना जन्म' की प्रक्रिया संभव हो सकेगी? शनै: शनै: ही सही पर क्या हम अपनी मानव जाति के विनाश को आमंत्रण नहीं दे रहे?

पुरुष और स्त्री मूलत: एक दूसरे के पूरक हैं। प्रकृति ने पुरुष को जहाँ बल और साहस जैसे गुण दिये वहीं स्त्री को दया और धैर्य जैसे गुणों से विभूषित किया। एक सफल जीवन के लिये इन सभी गुणों का समावेश होना चाहिये, इसीलिये परिवार नामक इकाई की कल्पना की गयी जिसमें पुरुष और स्त्री परस्पर सहयोग से जीवन की कठिनाइयों का सामना कर सके। क्या हम स्त्री विहीन परिवार की कल्पना कर सकते हैं? यदि बेटियों की संख्या इसी प्रकार घटती रही तो परिवार नामक इकाई का गठन कैसे होगा ?

हमारे विश्लेषण बताते हैं कि आज स्त्रियाँ ही बेटियों की सबसे बड़ी शत्रु साबित हो रही है। आँकड़ों के अनुसार भारत में हर वर्ष करीब 6 लाख कन्या भ्रूण हत्याऐं होती है, इस कृत्य में किसी न किसी रूप में महिला की ही भूमिका अधिक होती है। पुरुष ही नहीं, कितनी ही स्त्रियाँ स्वयं बेटियों को जन्म नहीं देना चाहती। 'छोटा परिवार, सुखी परिवार' की चाह में कितने ही तथाकथित आधुनिक परिवार 'सिर्फ एक बेटा' ही चाहते है और इस हेतु न केवल कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य पाप करने से भी नहीं हिचकिचाते वरन् गलती से जन्मी हुई बेटी को भी मौत के घाट उतार देते है। अभी पिछले दिनों माँ की ममता एक क्रूर मजाक उड़ाती एक घटना घटी। एक अस्पताल में किसी मानवीय त्रुटिवश एक नवजात कन्या दूसरी मां के नवजात पुत्री से बदल गयी। बाद में सत्य प्रकट होने पर जब कन्या को उसकी माँ को सौंपा गया तो पुत्र की चाह में अंधी उस माँ ने अपनी ही जन्मी बेटी को स्वीकार करने से इंकार कर दिया और नन्हीं सी मासूम बच्ची लावारिस बनकर रह गयी। इस तरह की घटनायें नयी नहीं है, परन्तु आज जबकि शिक्षा का इतना प्रचार प्रसार हो रहा है, इस तरह की घटनायें सोचने को विवश करती हैं कि क्यों एक माँ एक स्त्री होकर भी स्त्री के अस्तित्व को नकारना चाहती है? क्यों एक नारी ही नारी की शत्रु बन अंतत: अपनी ही जाति का विनाश चाहती है? इस पुरुष प्रधान समाज में जहां महिलायें आज हर क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है, वहीं दूसरी ओर कन्या भ्रूणहत्या, कन्या वध, और बेटी बेटे में भेदभाव कर अपनी ही जड़े कमजोर कर रही है। यह कैसा विरोधाभास है? इस तरह तो इस पुरुष प्रधान समाज की सत्ता को, पुरुषवादी अहं को हम और सुदृढ़ कर रहे हैं।

एक ओर बेटियों की घटती संख्या उनके अस्तित्व पर प्रश्नचिह्न खड़ा कर रही है, वहीं बेटों की बढ़ती संख्या भी भयावह भविष्य का संकेत कर रही है। इससे भविष्य में शिक्षा और रोजगार के लिये परस्पर संघर्ष व प्रतिस्पर्धा और अधिक बढ़ेगी। परिणामस्वरूप 'योग्यतम की उत्तरजीविता' ही कायम रह सकेगी और कम योग्यता वाले हजारों लाखों युवा अपने आपको घोर निराशा और हताशा में डूबा पायेंगे। इससे समाज में अपराध और दुराचार कई गुना बढ़ जायेंगे। पिछले दिनों एक फिल्म में इस समस्या को बड़ी ही मार्मिकता से उठाया गया। इसमें एक पुरुष बहुल गाँव की कहानी दर्शायी गयी जिसमें लड़कियां अत्यंत नगण्य संख्या में है। वहां अविवाहित लड़को की बड़ी संख्या है किन्तु विवाह हेतु लड़कियां ही नहीं है। परिणामस्वरुप निराश, हताश और नैतिक मूल्यों से विहीन ये युवा दुराचार में संलिप्त है। आज हमारे अखबार भी सामूहिक दुराचार और बलात्कार की घटनाओं से अटे पड़े है। क्या हम इन घटनाओं की नैतिक जिम्मेदारी लेने का साहस कर सकते हैं।

तो आइये हम अपने जैन धर्म के महान सिद्धांत 'अहिंसा परमो धर्म:' का पालन करते हुए शपथ लें कि कन्या भ्रूण हत्या और कन्या वध जैसे जघन्य पाप कभी नहीं करेंगे। 'जियो और जीने दो' को सम्मान देते हुए कन्या जन्म का स्वागत करे। परिवार के वरिष्ठजन घर में ऐसा वातावरण निर्मित करें जिसमें बेटियों को प्रोत्साहित किया जाये, उनके जन्म पर भी खुशियां मनाई जाये और बेटी बेटे में भेदभाव न किया जाये। हमारे साधु संत जो कि हमारे समाजोद्धारक हैं, भ्रूणहत्या जैसे पाप का विरोध करे। ऐसे परिवारों का सामाजिक बहिष्कार किया जाये जहां भ्रूण हत्या जैसा पापाचरण किया गया हो। ऐसी सामाजिक योजनायें बनाई जाये जिसमें 'बेटी बहुल' गरीब परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाये ताकि बेटी को परिवार में 'बोझ नहीं, वरदान समझा जाये'। समय आ गया है ऐसे ठोस कदम उठाकर बेटियों को बचाने का, ताकि उन्हें भी जीने का समान अधिकार मिल सके। क्योंकि –

माँ का प्यार, पिता का ताज है बेटी, सुख दुख में देती है साथ बेटी,
बेटा है गर चिराग वंश का, सहेजती दोनों कुलों की लाज है बेटी।

– अनुपमा जैन, सह संपादिका

गोलालारीय दर्शन समाज के 4500 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है। यदि आपके किसी रिश्तेदार तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें।